डिजीटल ई-पेपर
फर्स्ट न्यूज़ बीकानेर
खबर आपकी नज़र हमारी
विनोद जोशी (जाजड़ा) मो. 9660847946, दिनेश जोशी 'राजा' मो. 9461122426 27 अक्टूबर 2024, रविवार, बीकानेर email id : vinodjoshi33@gmail.com

राजस्थानी लोक रौ ग्यांन शास्त्र सूं बड़ौ है : प्रोफेसर चारण
सिमरथ रैयी मध्यकालीन राजस्थानी गद्य परम्परा : व्यास

फर्स्ट न्यूज बीकानेर 27 अक्टूबर 2024

बीकानेर। कालबोध की दृष्टि से राजस्थानी साहित्य को मौखिक एवं लिखित दो अलग अलग रूपों में परिभाषित किया जाता है। इस दृष्टि से राजस्थानी मध्यकालीन गद्य विधाएं मौखिक साहित्य से जुड़ी हुई है क्योंकि मध्यकालीन गद्य कहने की एक अनूठी कला है। राजस्थानी लोक साहित्य का ज्ञान शास्त्रीय ज्ञान से ज्यादा श्रेष्ठ एवं विशाल है। यह विचार ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ.) अर्जुनदेव चारण ने साहित्य अकादेमी एवं श्री नेहरू शारदा पीठ पीजी महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित मध्यकालीन राजस्थानी गद्य परम्परा विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद में बतौर अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि लोक साहित्य का निर्माण समाजऋषियों ने किया था जिसे लोक ने सहज रूप से स्वीकार किया जो अपने आप में अद्भुत है। राष्ट्रीय परिसंवाद संयोजक डॉ. प्रशांत बिस्सा ने बताया कि उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास ने कहा कि मध्यकालीन राजस्थानी गद्य परम्परा एक समृद्ध एवं अनूठी परम्परा है जिसे आधुनिक गद्य का आधार स्तंभ कह दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

प्रथम तकनीकी सत्र : प्रतिष्ठित रचनाकार डॉ. गीता सामौर की अध्यक्षता में आयोजित प्रथम तकनीकी सत्र में श्रीमती संतोष चौधरी ने मध्यकालीन राजस्थानी बात साहित्य एवं डॉ.गौरीशंकर प्रजापत ने मध्यकालीन राजस्थानी विगत साहित्य विषयक आलोचनात्मक पत्र प्रस्तुत किये।

द्वितीय तकनीकी सत्र : प्रतिष्ठित कवि-आलोचक डॉ.गजेसिंह राजपुरोहित की अध्यक्षता में द्वितीय तकनीकी सत्र सम्पन्न हुआ। इस सत्र में डॉ.सत्यनारायण सोनी ने मध्यकालीन राजस्थानी ख्यात साहित्य एवं डॉ. नमामी शंकर आचार्य ने मध्यकालीन राजस्थानी वारता साहित्य विषयक आलोचनात्मक शोध पत्र प्रस्तुत किये। एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का समापन समारोह प्रतिष्ठित विद्वान डॉ.मदन सैनी ने मुख्य आतिथ्य उद्बोधन में कहा की मध्यकालीन राजस्थानी गद्य परम्परा हमारी अनमोल धरोहर है। इस अवसर पर प्रतिष्ठित रचनाकार मधु आचार्य आशावादी, ब्रज रतन जोशी, राजेन्द्र जोशी, कमल रंगा, धीरेन्द्र आचार्य, नरेन्द्र किराडू शंकरसिंह राजपुरोहित, हरीश शर्मा, डॉ.रामरतन लटियाल, डॉ. हरिराम बिश्नोई, राजेन्द्र स्वर्णकार, रेणुका व्यास, प्रशांत जैन, नीतू बिस्सा, समीक्षा व्यास, मनीषा गांधी, राजकुमार पुरोहित, अमित पारीक, मुकेश पुरोहित सहित अनेक प्रतिष्ठित रचनाकार एवं राजस्थानी भाषा-साहित्य प्रेमी मौजूद रहे।